

ब्रह्मांड का व्याकरण

The Grammar of Cosmos Alignment

एक वाक्य में पूरा आंदोलन — पाणिनि
के षट्-कारक से पढ़ा गया

कर्ता

Agent

अपादान

Departure

करण

Instrument

सम्प्रदान

Recipient

अधिकरण

Locus

कर्म

Object

क्रिया

Action

हम सब,
मानव-केंद्रित दृष्टि से आगे बढ़कर,
शिक्षा और सहभागिता द्वारा,
हर जीव के लिए,
14,000 स्वराज विकासखंडों में,
नवसृजन
करते हैं।

कर्ता

अष्टाध्यायी 1.4.54

स्वतन्त्रः कर्ता

हम सब। कोई एक अवतार नहीं, कोई एक नेता नहीं — करोड़ों स्वतंत्र कर्ता मिलकर।

अपादान

अष्टाध्यायी 1.4.24

ध्रुवमपायेऽपादानम्

जिससे आगे बढ़ना है: वह दृष्टि जिसमें मनुष्य ने मनुष्य और प्रकृति पर प्रभुत्व को ही विकास मान लिया।

करण

अष्टाध्यायी 1.4.42

साधकतमं करणम्

सबसे प्रभावी साधन: 5 वर्ष की आयु से जीवन भर निःशुल्क आवासीय शिक्षा, और हर सक्षम व्यक्ति की प्रतिदिन 4 घंटे की सहभागिता।

सम्प्रदान

अष्टाध्यायी 1.4.32

कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्

किसके लिए: 140 करोड़ मनुष्य और 84 लाख योनियाँ — एक परस्परित परिवार।

अधिकरण

अष्टाध्यायी 1.4.45

आधारोऽधिकरणम्

कहाँ: लगभग 1 लाख लोगों के 14,000 स्वावलंबी विकासखंड — जहाँ शिक्षा, काम और उत्सव साथ चलें।

कर्म

अष्टाध्यायी 1.4.49

कर्तुरीप्सिततमं कर्म

जो सबसे अधिक चाहा गया है: ऐसा समाज जहाँ सबके पास शिक्षा हो, सबके पास काम हो, और काम बोझ नहीं, आनंद हो।

प्रस्ताव

सबको शिक्षा पात्रतानुसार, सबको काम योग्यतानुसार — इसे मौलिक संवैधानिक अधिकार बनाया जाए।

फिर सरकार कोई भी रहे, भारतीय दृष्टि और भारतीय जनता के साथ अन्याय संभव नहीं होगा।